मानवता और मानवीय मूल्यों के रक्षक : प्रोफेसर अच्युत सामंत

आज का युग 'सामान्य लोगों का युग' है जिसके विकास में युवाओं की भूमिका अहम् है।यह भी सच है कि जिस देश के युवा जितने अधिक विवेकी,सदाचारी और निःस्वार्थ समाजसेवी रहे हैं,वह देश उतना ही अधिक तरक्की किया है। लेकिन आज का युवावर्ग जिस संक्रमण काल से गुजर रहा है उसमें उसे सही मार्ग प्रशस्त करनेवाले अधिक से अधिक ऐसे आदर्श और चरित्रवान लोगों की आवश्यकता है जो अपने सरल और पारदर्शी व्यक्तित्व से युवाओं का आदर्श बनकर उन्हें विवेकी बना सकें। उनका सही और उचित मार्ग दर्शन कर सकें। आज का युवा विवेक दिग्भ्रमित है।उसके चारों तरफ नकारात्मकता और पश्चिमी सभ्यता ,संस्कार और संस्कृति का प्रभाव है।आज का युवा विवेक उत्साही नहीं अपितु हतोत्साही है। आज का युवा विवेक अपने भारतीय संस्कार,संस्कृति और सभ्यता को भूलते जा रहा है।

एक समय वह था जब युवावर्ग के विवेक को संवारने का संकल्प लेकर हमारे आध्यात्मिक जगतगुरु विश्ववंद्य रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने 1901 ई. में विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की।शांतिनिकेतन जैसी अनोखी शैक्षिक पहल की। एक समय वह भी आया जब भारतीय युवा विवेक के सनातनी संस्कार और संस्कृति को जीवित रखने के लिए महामना मदनमोहन मालवीय ने 1916 ई. में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। और 1992–93 में ओडिशा के कटक जिले के कलराबंक गांव का एक अति सामान्य युवा अच्युत सामंत ने अपनी कुल जमा पूंजी मात्र पांच हजार रुपये से भुवनेश्वर ओडिशा में 'केआईआईटी';'कीट' और 'केआईएसएस';'कीस' की स्थापना की है जहां पर आज 27–27 हजार से भी अधिक छात्र–छात्राएं अपने संस्थापक प्रो अच्युत सामंत को अपना रोलमॉडल मनाकर उन संस्थाओं के माध्यम से अपने भावी जीवन को संवार रहे हैं। सच तो यह भी है कि प्रो अच्युत सामंत ने अपनी संस्था आदिवासी आवासीय विद्यालय;कीस की स्थापना ही 'मानवीय मूल्यों और मानवता की रक्षा'– के उद्देश्य से की है जहां पर आदिवासी बच्चों के

केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक प्रो सामंत की ओर से निःशुल्क पठन–पाठन और समस्त आवासीय सुविधाओं के साथ–साथ आदिवासी संस्कृति और संस्कार भी वहां पर पल्लवित और पुष्पित हो रहा है। प्रतिवर्ष कीस मानवतावादी अवार्ड आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा जैसे विश्व के अनेक नामी निःस्वार्थ समाजसेवियों को प्रदान किया जाता है।

यह एक बाल मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बालक/युवा जैसा देखता है वैसा ही वह बनना चाहता है और बनता भी है। आज के युवा विवेक के आदर्श और अनुकरणीय व्यक्तित्व के रुप में प्रो अच्युत सामंत जैसे लोगों की आवश्यकता है। प्रो अच्युत सामंत सच्चे अर्थों में गांधीवादी हैं। गांधीवादी विचारों के आदर्श हैं।उनके अनुसार आज भारत के प्रत्येक शिक्षक को चाणक्य जैसा उत्तम और सदाचारी व्यक्तित्ववाला शिक्षक बनने की आवश्यकता है वहीं प्रत्येक शिक्षक को अपने प्रत्येक युवा विद्यार्थी को चन्द्रगुप्त जैसे हानेहार और सदाचारी युवा बनाने की आवश्यकता है।सदैव सकारात्मक सोच को अपनानेवाले 54वर्षीय प्रो अच्युत सामंत आज न केवल कीट–कीस के हजारों युवा विवेक के सच्चे निर्माता हैं अपितु अपने यथार्थ और आदर्श पारदर्शी व्यक्तिव से देश–विदेश के लाखों युवाओं के आदर्श हैं। करोड़ों युवा विवेक के सच्चे निर्माता हैं।हमसब तो सिर्फ अपना व्यक्तिगत जीवन संवारते हैं लेकिन प्रो अच्युत सामंत पिछले लगभग 25 वर्षों से हजारों, लाखों बच्चों,युवाओं और उनके अभिभावकों और उनके परिवारों का जीवन संवार रहे हैं। प्रो अच्युत सामंत की अपनी एक अलग ही पहचान है उनके चेहरे पर सदैव सरलता,सहजता,मृदुलता,आत्मीयता, विनम्रता,भगवान बुद्ध–जैसी शांति और सदाचार की दिव्य झलक देखने को मिलती है। सिर्फ पांच फीट,पांच इंच का व्यक्तित्व प्रो अच्युत सामंत को देखने से ऐसा लगाता है कि वे आज के दूसरे लालबहादुर शास्त्री हैं। सच्चे अर्थों में भारत के दूसरे मदनमोहन मालवीय हैं। गरीब,अनाथ,बेसहारा आदिवासी समुदाय के जीवित मसीहा हैं। आध्यात्मिक दिव्यपुरुष हैं,आलोक पुरुष हैं,जननायक हैं,कारपोरेट संत हैं,बापू जैसे सत्य,अहिंसा और त्याग के

पुजारी हैं। मैंनेजमेंट गुरु और सच्चे संत हैं प्रो अच्युत सामंत। उनकी संस्थाएं कीट–कीस आज आधुनिक तीर्थस्थल हैं।कीस दूसरा शांतिनिकेतन है। सबसे बड़ा दरिद्रनारायण सेवा केन्द्र है। मानवीय मूल्यों और मानवता के संरक्षण और विकास के सच्चे आदर्श हैं कीट–कीस और प्रो अच्युत सामंत जिनके दर्शन के लिए पूरे विश्व से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में वैज्ञानिक,विधिवेत्ता,राजनेता,समाजसेवी,अनुसंधानकर्ता,फिल्मी सितारे,खिलाड़ी,नोबेल पुरस्कार विजेता,कारपोरेट जगत के भामाशाह,साधु–महात्मा और फिल्मनिर्माता आदि आते हैं। प्रो अच्युत सामंत जिसे आज सभी एक करिश्माई दिव्य पुरुष मानते हैं उनकी बाल्यकाल की गरीबी की कठोरतम जीवन यात्रा ओडिशा के कटक जिले के सुदूरवर्ती कलराबंक गांव की पगडण्डी से आरंभ होकर आज भारतीय संसद तक की है। प्रो अच्युत सामंत आज राज्यसभा सांसद हैं जिनसे भारत के युवा विवेक के सच्चे निर्माता के रुप में अनेक अपेक्षाएं हैं। सच्चे जगन्नाथ भक्त और हनुमान भक्त प्रो अच्युत सामंत सही मायने में सबके आदर्श बनकर युवा विवेक के वास्तविक निर्माता आजीवन बने रहें,आजीवन मानवता और मानवीय मूल्यों के कीट–कीस के माध्यम से रक्षक बने रहें,भगवान जगन्नाथ के चरणों में यही प्रार्थना है।

–प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय,भुवनेश्वर,ओडिशा.